SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-3, July to September: 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

विश्व भाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदम

डॉ. जगदीश (सहायक आचार्य, हिंदी)

सारांश : *वैश्विक स्तर पर भी हिंदी का विशेष महत्व है क्योंकि हिंदी आबादी की दृष्टि से विश्व के सर्वाधिक बड़े लोकतांत्रिक देश की सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के इस दौर में विभिन्न बहुराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत का निम्न-मध्यम एवं मध्यम वर्ग बड़े उपभोक्ता के रूप में सुलभ है। इस उपभोक्ता वर्ग तक पहुंच बनाने का रास्ता हिंदी से होकर गुजरता है। हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में हिंदी सिनेमा, हिंदी संगीत एवं क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों की महत्ती भूमिका रही है।नवीन ज्ञान, तकनीकी अनुकूलता और विदेशों में हिंदी को विभिन्न रूपों में स्वीकार करने से हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में पुष्पित, पल्लवित तथा फलित हो सकेगी। राजभाषा हिंदी को समृद्ध और सक्षम बनाकर ही हम 'विकसित भारत- समृद्ध भारत' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है।*

भाषा और बोली सामाजिकता के गुण को धारण करती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के लिए किसी-न-किसी भाषा को माध्यम बनाता है। डॉ. श्यामसुंदर दास ने भाषा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते है।"[1] राजभाषा हिंदी भारतीय अस्मिता की प्रतीक है क्योंकि हिंदी प्रादुर्भाव व विकास की दृष्टि से पूर्णतः स्वदेशी है। हिंदी के भाषायी विकास की जड़ें देवभाषा संस्कृत से जुड़ी हुई है किंतु हिंदी पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज जैसी सैकड़ों देशी बोलियों और भाषाओं से गुजरते हुए वर्तमान स्वरूप तक पहुंची है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी ने संपर्क भाषा की भूमिका का निर्वहन करते हुए संपूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। हिंदी के इसी महत्त्व को पहचानते हुए संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संवैधानिक दर्जा देते हुए राजभाषा बनाया। हिंदी भारतवर्ष में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। चूंकि भारत लोकतांत्रिक देश है इसलिए बहुमत की दृष्टि से भी हिंदी को राजभाषा घोषित करना न्याय संगत था। हालांकि भारत जैसे विविधता प्रधान देश में एक भाषा पर सर्व सहमति बनना असंभव है इसलिए अंग्रेजी को सह-राजभाषा का दर्जा दिया गया।

वैश्विक स्तर पर भी हिंदी का विशेष महत्त्व है क्योंकि हिंदी आबादी की दृष्टि से विश्व के सर्वाधिक बड़े लोकतांत्रिक देश की सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के इस दौर में बाजार का विशेष महत्त्व है। भारतवर्ष विकासशील राष्ट्र से

विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है इसीलिए विभिन्न बहुराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत का निम्न-मध्यम एवं मध्यम वर्ग बड़े उपभोक्ता के रूप में सुलभ है। इस उपभोक्ता वर्ग तक पहुंच बनाने का रास्ता हिंदी से होकर गुजरता है क्योंकि इस वर्ग में अधिकतर की संपर्क भाषा हिंदी ही है। यही कारण है कि विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने विज्ञापन एवं अन्य आर्थिक गतिविधियों की भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने के लिए मजबूर है।

भारतवर्ष की विराट सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा तक पहुंच सुनिश्चित करने का माध्यम भी हिंदी ही हो सकती है। भारत की सनातन संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' एवं 'जियो और जीने दो' की परंपरा रही है। भारत ने सदैव ही वैश्विक मुद्दों यथा- जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, वैश्विक महामारी एवं मानवाधिकारों इत्यादि पर अत्यंत सकारात्मक एवं सहयोगात्मक भूमिका निभाई है इसलिए ऐसे राष्ट्र की राजभाषा का वैश्विक महत्त्व निश्चित तौर पर बढ़ जाता है। हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में हिंदी सिनेमा, हिंदी संगीत एवं क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों की महत्ती भूमिका रही है। हिंदी की वैश्विक उपलब्धियों को और समृद्ध करते हुए वर्ष 2022 में हिंदी लेखिका गीतांजलि श्री की कृति 'रेत समाधि' को प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

भारत सरकार हिंदी का वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार के लिए अनवरत प्रयासरत है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया इसीलिए इस दिन के ऐतिहासिक महत्त्व को समझते हुए भारत सरकार ने 10 जनवरी 2006 से इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। विदेश मंत्रालय द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी 2023 तक 12 वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन नांदी, फिजी में आयोजित किया। इस सम्मेलन का विषय था- ''हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक'' इसका तात्पर्य है कि हिंदी की विराट एवं समृद्ध ज्ञान को समेटते हुए आधुनिक तकनीक से युक्त करके निरंतर प्रासंगिक बनाए रखना। इसके अलावा मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई है। आज हिंदी के वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार हेतु भारतीय दूतावास, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विभिन्न देशी-विदेशी विश्वविद्यालय एवं संस्थाएं से सक्रिय है। वैश्विक स्तर पर हिंदी की प्रगति को लेकर प्रसिद्ध लेखक राजेश जोशी लिखते है कि "विश्व में ज्यों-ज्यों हिंदी का विस्तार हो रहा है, त्यों- त्यों उसके साहित्य का वैश्विक स्वरूप उभरता चला जा रहा है। आज हिंदी भारत तक ही सीमित नहीं, भारत की सीमाओं से बाहर दूर-दूर के देशों में भी उसकी अलग पहचान बन रही है। मॉरीशस, फ़िजी, गुयाना, सूरीनाम आदि देशों में जहाँ भारतवंशीय प्रचुर संख्या में हैं, उनका साहित्य एक नए रूप में अपनी पहचान बना रहा है। आकार में छोटे-छोटे इन देशों में कितनी आस्था भाव के साथ, समर्पित भाव से लेखक लिख रहे हैं, उसे देखकर सहज आश्चर्य होता है।"[2]

संयुक्त राष्ट्र संघ की मंडारिन (चाइनीज), अरबी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश और अंग्रेजी छह आधिकारिक की भाषाएं है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए प्रयास जारी है। इस दिशा में कुछ प्रगति भी हुई है। 2018 ई. में करोड़ों हिंदी भाषी लोगों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिंदी में ट्विटर अकाउंट और न्यूज पोर्टल शुरू किया है। हर सप्ताह संयुक्त राष्ट्र संघ का एक हिंदी ऑडियो बुलेटिन जारी होता है।

वर्तमान में हिंदी अन्य वैश्विक भाषाओं की तुलना में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से तारतम्यता और अद्यतन की कमी, तकनीकी अनुकूलता तथा स्वरूपगत लचीलेपन की कमी जैसी चुनौतियों से भी जूझ

रही है। भाषा जितनी समृद्ध और सक्षम होती है उतनी ही स्वीकार्य होती है। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए हमें कई स्तरों पर प्रयास पुरजोर ढंग से करने होंगे। पहला हिंदी को शब्दावली एवं तकनीक के स्तर पर सक्षम बनाते हुए निरंतर प्रासंगिक बनाए रखना है। भाषा तकनीकी अनुकूल होनी चाहिए क्योंकि वैश्वीकरण का संपूर्ण ढाँचा ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित है। ऐसे में हिंदी यदि तकनीकी दृष्टि से सक्षम नहीं होगी तो उसका विस्तार एक सीमा के बाहर संभव नहीं है। तकनीक प्रचार-प्रसार की गति के लिए अभूतपूर्व स्थितियाँ लेकर आती है जो बहुत कम समय में फलने-फूलने का अवसर प्रदान करती है। इससे हिंदी वर्तमान ज्ञान-विज्ञान एवं आधुनिक तकनीकी विषयों को अभिव्यक्त करने में और सक्षम बनेगी।

वैश्विक भाषा बनने के लिए हिंदी में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र की अद्यतन, प्रामाणिक और तथ्यपरक जानकारी युक्त विचार व विश्लेषण उपलब्ध हो। इससे हिंदी रोजगार के अवसर पैदा करने वाली भाषा बन पायेगी। हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने चिकित्सा शिक्षा का माध्यम पूर्णतः हिंदी में करने का क्रांतिकारी निर्णय लिया है। यह निर्णय उस जड़ धारणा को कितना खंडित कर पाएगा कि चिकित्सा, इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी विषयों की भाषा अंग्रेजी ही हो सकती है। हमें सिर्फ इस निर्णय मात्र से उत्साहित नहीं होना है बल्कि यह पड़ताल भी करनी है कि क्या वास्तव में इस निर्णय का प्रभावी क्रियान्वयन हुआ, यदि हुआ है तो कितना सफल हुआ है? हिंदी को ज्ञान-विज्ञान एवं कृत्रिम मेधा की भाषा बनाने के लिए अंतर्विषयक शिक्षा पद्धति काफी प्रभावी होगी क्योंकि इससे साहित्य के विद्यार्थी के पास भी तकनीकी विषयों को चुनने का विकल्प होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 अंतर्विषयक शिक्षा प्रणाली पर बल देती है।

दूसरा उपाय यह करना होगा कि हमें राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्वीकृति को और बढ़ाना है। हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली को अपनाने की गति को और बढ़ाना होगा। इससे हिंदी की शब्दावली समृद्ध होगी तथा हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के अधिक निकट आएगी। इस उद्देश्य की पूर्ति में स्कूली शिक्षा में त्रि-भाषा सूत्र भी प्रभावी हो सकता है। 'त्रि-भाषा सूत्र' तीन भाषाओं हिंदी, अंग्रेजी और संबंधित राज्यों की क्षेत्रीय भाषा से संबंधित है। इसके लिए उत्तर भारत के हिंदी भाषी राज्यों में तीसरी भाषा के रूप में दक्षिण भारतीय भाषा के अध्ययन की अनिवार्यता होनी चाहिए।

इसके अलावा भाषा के मानकीकृत और परिनिष्ठित रूप में भी ज्यादा लचीला व्यवहार अपनाना होगा। विशेष रूप से उच्चारणगत भाषिक रूप को लेकर क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा और संस्कृति के अनुरूप उच्चारण करता है इसीलिए सीखी गई नवीन भाषा पर भी उसकी मातृभाषा का उच्चारणगत प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी को देखें तो ब्रिटिश, फ्रांस और यू.एस.ए. के अलग- अलग भाषा रूप व्यवहार में है। इस विषय में मध्यम मार्ग अपनाते हुए भारत में लिखने और बोलने के स्तर पर उनके मानक रूप को बचाए रखने की जरूरत है किन्तु वैश्विक परिदृश्य में व्याकरणिक और भाषिक लचीलेपन को अपनाने की आवश्यकता है।

नवीन ज्ञान, तकनीकी अनुकूलता और विदेशों में हिंदी को विभिन्न रूपों में स्वीकार करने से हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में पुष्पित, पल्लवित तथा फलित हो सकेगी। भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता व्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। हिंदी अपने सहज प्रवाह के कारण 'बहते नीर' की तरह निर्मल भाषा है। अंत में कहा जा सकता है कि

राष्ट्रीय की उन्नति के साथ उस देश की भाषा का उत्थान भी संबद्ध है। राजभाषा हिंदी को समृद्ध और सक्षम बनाकर ही हम 'विकसित भारत- समृद्ध भारत' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भाषा विज्ञान – डॉ. श्यामसुंदर दास; प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण- 2009, पृष्ठ सं.- 29

विश्व पटल पर उभरता हिंदी साहित्य- हिमांशु जोशी (लेख), चेतना का आत्मसंघर्ष : हिंदी की इक्कीसवीं सदी – सं. कन्हैयालाल नंदन, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, संस्करण - 2007, पृष्ठ सं.- 59